भारत–संयुक्त राज्य अमेरिका रणनीतिक सम्बन्धः सन् 2008 से वर्तमान तक

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
के अन्तर्गत राजनीति शास्त्र में पी0 एच0 डी0 की उपाधि
हेतु प्रस्तावित रूपरेखा
2018–2019

पर्यवेक्षक

डॉ0 अंजू शर्मा (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)

समाज शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग

समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

प्रीति कुमारी

शोध छात्रा

विभागाध्यक्ष

प्रो0 पूर्णिमा जैन

समाज शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो0 कमलजीत संधु

समाज विज्ञान संकाय

समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

भारत संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धः सन् 2008 से वर्तमान तक

प्रस्तावना

21वीं शताब्दी में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व के दो महत्वपूर्ण लोकतान्त्रिक राष्ट्र है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का सबसे प्राचीन लोकतन्त्र है, जबकि भारत विश्व का सबसे बड़ा सक्रिय लोकतान्त्रिक देश है। नागरिक अधिकार तथा स्वतन्त्रताओं के प्रति प्रतिवद्धता, विविधतापूर्ण संस्कृति, पंथनिरपेक्षता तथा स्वतन्त्र नागरिक समाज अादि समानताएँ दोनों समाजों में समान रूप से पायी जाती है। वर्तमान में वैश्विक राजनीतिक समीकरण में विश्व की इन सार्थक लोकतान्त्रिक शक्तियों के मध्य न केवल राजनैतिक बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, सैन्य तकनीकी, साझेदारी के माध्यम से संबंध स्थापित किये जा रहे। भारत और अमेरिका दो ऐसे राष्ट्र है जिन्होने अपने ऐतिहासिक सम्बन्धों में काफी उतार चढ़ाव देखे है। दोनों देशों के मध्य भिन्न–भिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय हितों के कारण समय–समय पर तनावपूर्ण संबंध रहे है लेकिन परिस्थितियों के बदलने पर दोनों एक दूसरे के करीब भी आये है। शीत युद्ध की राजनीति ने भारत व अमेरिका संबंधों को बहुत अधिक प्रभावित किया है। शीत युद्ध के काल में भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति का अनुप्रयोग किया तथा अपने हितों की रक्षा के लिए विभिन्न राष्ट्रों से अच्छे संबंध बनाने की पहल की। जबकि अमेरिका द्वारा जो हमारे साथ नहीं वो हमारे खिलाफ है की बात कही गयी । 1965 तथा 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान अमेरिका ने खुले तौर पर पाकिस्तान को सहयोग दिया इस कारण वंश भारत ने 1971 में रूस के साथ भारत रूस मित्रता सन्धि पर हस्ताक्षर किये अतः इस दौरान भारत व अमेरिका के संबंधों में बहुत अधिक मतभेद व संदेह विद्यमान था।

1991 में सोवियत संघ के विद्यटन के बाद भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंधों में धीरे–धीरे सकारात्मक सुधार होना प्रारम्भ हुआ। 21 मार्च 2000 को राष्ट्रपति क्लिंटन और प्रधानमंत्री वाजपेयी ने नई दिल्ली में एक संयुक्त बयान ''भारत–अमेरिकी संबंध 21 वीं शताब्दी के लिए एक परिकल्पना'' नामक दस्तावेज पर संयुक्त हस्ताक्षर किये थे। जनवरी 2015 को भारत की

तीन दिन की यात्रा पर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा भारत आये तथा भारत के गणतन्त्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बनने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बने। जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका व भारत के सम्बन्ध और अधिक सुदृढ़ हुए।वर्तमान समय में भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध विकसित होकर वैश्विक रणनीतिक भागीदार बन चुके है और दोनों देश मिलकर कई मूल्यों पर एक दूसरे का सहयोग करते है व अपने हितो को पूरा करते है। दोनों ही राष्ट्र आज एक उद्देश्य का अनुसरण करते है, "चले साथ–साथ फारवर्ड टुगेदर बी गो" जिसे सितम्बर 2015 में अपनाया गया तथा ''साँझा प्रयास, सब का विकास'' जिसे जनवरी 2015 में अपनाया गया। वर्तमान समय में भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य राजनीतिक स्तर पर उच्चस्तरीय दौरे आपसी हितों की पूर्ति हेतु बढ़ गये है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा अमेरिका राष्ट्रपति बराक ओबामा की आपसी यात्राओं के दौरान "देल्ही डिक्लेरेशन ऑफ फ्रेडशिप" को जारी किया गया। इसके "चले साथ–साथ फारवर्ड टुगेदर बी गो" "सांझा प्रयास सबका विकास; रोयर्ड एफर्ट, प्रोग्रेस फॉर ऑल" के द्वारा भारत अमेरिकी सम्बन्धों का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

सहयोगात्मक सम्बन्धों के अतिरिक्त दोनों देशों के मध्य विभिन्न मुद्दों को लेकर गतिरोध तथा चुनौतियां भी प्रकट होती है। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले घटकों में पाकिस्तान, रूस तथा चीन प्रमुख घटक है। कश्मीर मुद्दे पर अमेरिका के द्वारा प्रारम्भ से पाकिस्तान पक्ष का समर्थन किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत के परमाणु हथियार परीक्षण के पश्चात अमेरिका द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये । इन आधार पर भारत–अमेरिका के सम्बन्धों में नकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। उपरोक्त मतभेदों के बावजूद 2008 में हुए "भारत–अमेरिका परमाणु समझौता" के बाद से दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध सुधार को अग्रसर हो रहे है तथा भारत व अमेरिका के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्ध मजबूत हो रहे है।

सैद्धान्तिक रूप रेखा –

भारत की विदेशी नीति राष्ट्रीय हितों और अन्तर्राष्ट्रीय शांति दोनो को अपना उद्देश्य निर्धारित कर क्रियान्वित होती है। मोडलस्की ने अपनी पुस्तक "A Theory of Foreign Policy" (1962) में विदेश नीति को परिभाषित करते हुए कहा था कि विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिधिधियों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवादी विचार शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व व सहयोग पर बल देता है। गुटनिरपेक्षता की नीति का उद्देश्य एक स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्वाह करना तथा संघर्ष की सम्भावनाओं को कम करके अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करना है। भारत की विदेशी नीति शान्ति सुरक्षा व शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की रही है। इन्ही उद्देश्यों को भारतीय संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 51 में उल्लेखित किया गया है। इसी के आधार पर भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता तथा पंचशील के सिद्धान्तों को अपनाया गया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध में जब विश्व दो गुटों में बंट गया था जिसमें भारत के द्वारा अमेरिकी गुट में शामिल न होने से अर्थात् गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने से भारत व अमेरिका के सम्बन्धों में नकारात्मकता की झलक दिखाई दी। इसके साथ पंचशील सिद्धान्त के आधार पर भारत के द्वारा इसके पाँच प्रमुख उद्दश्यों को अपनाया गया है राष्ट्रों के प्रति पारस्परिक अखण्डता व सर्वोच्च सत्ता की भावना, अनाक्रमण, दूसरे राष्ट्रो के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप समानता व पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को अपनाया है। यह सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आदर्शवादी सिद्धान्त को दर्शाता है। वर्तमान में विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र की एकता, अखण्डता और उसकी भौगोलिक सीमाओं की रक्षा करना है। वर्तमान की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति राष्ट्रहित तथा शक्ति की नीति है। इसमें यर्थाथवादी सिद्धान्त सबसे अधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। यथार्थवादी विद्वान मोर्गेंथाऊ ने अपनी कृति "Politics Among Nations" (1948) के अन्तर्गत राजनीति को शक्ति के लिए संघर्ष कहा है। शक्ति के माध्यम से राष्ट्र अपने हितों की अभिवृद्धि करते है। मैकियावली

ने अपने ग्रन्थ 'The Prince (1932)' में उल्लेख किया है कि शासक का प्राथमिक कार्य राष्ट्रीय सुरक्षा को संरक्षित करना हैं। इसके लिए शासक में शेर (शक्ति) व लोमड़ी (चालाकी) दोनो गुण होने चाहिए। ग्रीक यर्थाथवादी थ्यूसीडाइस ने अपने ग्रन्थ "The Peloponnesian war" (C-430-406BC) में माना है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए अन्तहीन संघर्ष है। जिसकी जड़े मानव स्वभाव में निहित है। हॉब्स की रचना "Levialthan (1651)" के अनुसार आधुनिक काल में अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत अवस्था संप्रभु राज्यों की अराजकता पर आधारित है अर्थात् अराजकता की अवस्था है जिसमें युद्ध की स्थिति निरंतर बनी रही है। हॉब्स का मत था कि राज्य अपने संबंधों को कानूनी आवरण पहनाने के लिए अनुबंध या समझौते कर सकते है।

नव यर्थाथवादी विद्वान केनैथ वाल्ज द्वारा अपनी पुस्तक "Theory of International Politics" (1979) के अनुसार वर्तमान परिदृश्य में सरुक्षात्मक यर्थाथवाद परिलक्षित होता है। प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा के लिए अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहते है। ई.एच. कार ने अपने ग्रन्थ "Twenty years of crises" (1939) में कहा कि अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति प्रभावी शक्तियों का निहित स्वार्थ है। जो राष्ट्र–राज्य अपने क्षेत्रीय सीमाओं या अपनी आर्थिक सामरिक शक्ति का विस्तार करना चाहते है उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एक दमनकारी शासन व्यवस्था है जिसे वैश्विक सामंजस्य के वेश में पेश करते है। प्रसिद्ध उदारवादी इमैन्युल कांट के अनुसार चिरस्थायी शांति को स्थापित करने के लिए व्यक्तिगत चेतना में बदलाव तथा गणतंत्रात्मक संविधान की आवश्यकता है। राज्यों के मध्य संघीय समझौता युद्ध का विनाश कर सकते है। ये संघ अधिराज्य वैश्विक सरकार के अतिरिक्त एक स्थायी शांति संधि का सर्मथन कर सकते है

प्रारम्भ से अमेरिका की विदेश नीति के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने किसी भी गुट में शामिल न होकर तटस्थता की नीति अपनायी तथा प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति बुडरों बिल्सन के अंतराष्ट्रीय शान्ति से संबंधित आदर्श वादी विचारों के आधार पर ही 1919 में लीग ऑफ नेशन्श की स्थापना की गयी। परन्तु परिस्थितियों में परिवर्तन स्वरूप अमेरिका की विदेश नीति ने आदर्शवाद से यर्थाथवाद का रूप ले लिया। वर्तमान

में अमेरिकी विदेश नीति में राष्ट्रीय हित, सैन्य शक्ति को बढ़ाना, शक्ति संतुलन को कायम रखना, तथा अतंराष्ट्रीय विश्व व्यवस्था को कायम रखना तथा अपने आर्थिक राष्ट्रीय हितों को बढ़ाना मुख्य तत्व है। स्वतंत्रता के बाद में भारत के द्वारा अपनी स्वतंत्र विदेश नीति का निर्वाह किया गया हैं, भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण रूप से आदर्शवादी विचारधारा अधिक परिलक्षित होती है। भारत के द्वारा गुटनिरपेक्षता, पंचशील, उपनिवेशवाद का विरोध, संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन, विश्व शान्ति का समर्थन तथा तीसरे विश्व के साथ एकता, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति, ऊर्जा सुरक्षा तथा इसके लिए नागरिक परमाणु ऊर्जा सहयोग स्थापित करने की नीति आदि प्रमुख तत्वों को अपनी विदेश नीति में शामिल किया गया है। मोदी की विदेशी नीति के पूर्व के वर्षों की नीति में भारत एक सॉफ्ट स्टेट के रूप में शामिल था मोदी के शासन काल में दोनों राष्ट्रों ने राजनैतिक व व्यापारिक तथा सैन्य सभी मुद्दों पर कार्य किया।

साहित्यिक पुर्नविलोकन

Conley (2001) लेखक ने अपनी पुस्तक में भारत–रूस और परमाणु सहयोग में अमेरिका के विकल्पों के रूप में चर्चा की गई है। इस सन्दर्भ में लेखक का मानना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका को वैश्विक राजनीति में शक्ति संतुलन बनाये रखना चाहिये, अर्थात् भारत के साथ सैन्य और परमाणु सहयोग के क्षेत्र में वुद्धि करनी चाहिए। जिससे की अमेरिका रूस को प्रतिसंतुलित कर सकें। यद्यपि शीत युद्ध के दौरान भारत अमेरिका के तनावपूर्ण रहें लेखक का मानना है कि शीत युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका भारत संबंध और रूस के मध्य सहयोग केवल अमेरिकी महत्वकांक्षा, भारत के राष्ट्रीय हित और रूस के आर्थिक विकास के कारण बरकरार रहे। स्पष्ट रूप से लेखक ने अपना तर्क दिया है कि अमेरिका को भारत के साथ सीमित ओर नियंत्रित परमाणु विस्तार सुनिश्चित करने के लिए दीर्घकालिक विश्वास ओर सहयोग को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

Mathur (2004) लेखक के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का बहुरूपदर्शन मित्र–शत्रु–तटस्थ नक्षत्र का पैटर्न प्रस्तुत करता है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र वह स्थान है जहां प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति

बढ़ाने के लिए दूसरों को अधिक शक्ति प्राप्त करने से रोकता है। भारत और अमेरिका दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र है तथा उदार लोकतन्त्र में समान विश्वास रखते है। लेकिन यह वैचारिक समानता उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने सभी कार्यो और प्रतिक्रियाओं में सहयोग करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकी है। इस संबन्ध में, भारत अमेरिका संबंधों के विशेषज्ञ सटीफन फिलिद कोहेन ने "पेटांगन और पावर" में उल्लेख किया है। इस पेंटागन के पाँच किनारे या कोण हैः यू.एस.ए, सोवियत संघ, भारत, पाकिस्तान, और चीन। भारत अमेरिकी सम्बन्धों का विश्लेषण आधी सदी तक करने से पता चलता है कि दोनों एक–दूसरे आदतों का सम्मान करने में विफल रहे हैं। यदि भारत महाशक्ति के सामने मौजूद चुनौतियों के कारण को नही समझ नही पाया तो अमेरिका एक नए स्वतंत्र देश की भावनाओं को समझने में विफल रहा। भारतीय परिप्रेक्ष्य में तनाव का प्रमुख कारण अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को बहुत अधिक मात्रा में आर्थिक व सैन्य सहायता करना था। यू.एस.ए ने पाक को भारत के बराबर लाने का प्रयास किया। 1974 में परमाणु उपकरण के परीक्षण को अमेरिका व भारत के सम्बन्धों और अधिक गर्त में लाने वाला मूल कारण माना गया। शीत युद्ध के अन्त के नये अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को उत्पन्न किया तथा भारत अमेरिका सम्बन्धों को अच्छा करने के नवीन अवसर प्रदान किये। निष्कर्ष तौर पर भारत अमेरिका सम्बन्धों को सामाजिक–आर्थिक आधार पर सुधारा जा सकता है।

Mishra (2004) – लेखक के द्वारा भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धों में ट्रेक–1 तथा ट्रेक–2 की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। भारत–अमेरिकी सम्बन्धों को विकसित करने में ट्रेक द्वितीय की प्रासंगिकता है। इसकी आवश्यकता तब होती है। जब देशों की पारस्परिक स्थिति प्रतिकूल होती है, जो निश्चित रूप से भारत और अमेरिका के बीच की नही है। दोनो देशों के बीच मौजूद परमाणु गतिरोध के कारण ट्रेक–2 पूर्ण पोखरण 2 की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण था। जिसमें ट्रेक–1 वांछित प्रगति नहीं कर सका नतीजन, ट्रेक–2 को इस सेवा के लिए सम्बन्धित किया गया। भारत और अमेरिका दो जीवन्त लोकतंत्र है। भारत के सी.टी.वी.टी. के विवादित मामले को ट्रेक–2 स्तर पर समानान्तर जुड़ाव तथा व्यापाक अन्र्तक्रिया के लिए अनुकूल

वातावरण बनाकर इस विवाद को कम करने में मदद करता है।ऐसा माना जाता है कि भारत के साथ अमेरिका जुड़ाव ट्रेक–1 और ट्रेक–2 ने प्रदान की है इनके द्वारा द्विपक्षीय पक्ष के विचार की नकारात्मक बारीकियों को अच्छी तरह से प्रबन्धित किया गया है।यह भारत अमेरिका के आपसी संदेह व असहज भावनाओं को दूर करने में उपयोगी साबित होगा।और एक नया अध्याय शुरू करेगा जो दोनों देशों के साथ–साथ वैश्विक हितों ओर आकांक्षाओं को पूरा करना फायदे मंद होगा।

Weiss (2007) लेखक के द्वारा भारत अमेरिकी सम्बन्धों को न्यूक्लियर दृष्टि से महत्व को स्पष्ट किया है। भारत व अमेरिका के मध्य 2006 को होने वाली न्यूक्लियर डील के बाद से भारत अमेरिका सम्बन्धों में घनिष्टता देखी गयी। लेखक के अनुसार इस समझौते का उद्‌देश्य नागरिक परमाणु उर्जा उत्पादन को बढ़ावा देना नही बल्कि यह समझौता एक रणनीतिक साझेदारी की आधार शिला बना और एशियाई शक्ति सन्तुलन में इसका महत्व अधिक था। लेखक ने इस न्यूक्लियर समझौते के फायदे व नुकसान का विश्लेषण करते हुए कहा है कि भारत के लिये यह समझौता कई फायदे और कुछ नुकसान को सहन करता है। दूसरी ओर यह सौदा कई और जोखिमों को वहन करता है। समझौते के जुड़े ज्ञापन में दोनों देशों ने अपने व्यापारिक साझेदारी को बढ़ाने की घोषणा की है। अमेरिका के लिए इस समझौते का सबसे बड़ा महत्व एशिया शक्ति संतुलन की प्रक्रिया को स्थापित करना माना जा रहा है। लेखक ने इस परमाणु समझौते के महत्व को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है कि इस परमाणु समझौते के बाद भारत की एशिया में सम्मान व शक्ति को और अधिक बढ़ाती है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि भारत व अमेरिका दोनों देशों को परमाणु समझौता के द्वारा अपने स्तर लाभ प्राप्त हुआ है।

Rathi (2009)– के अनुसार भारत अमेरिका एन.पी.टी. (परमाणु प्रसार निषेध संधि) के प्रश्न पर गहरे मतभेद रहे। अमेरिका चाहता था कि भारत इस पर हस्ताक्षर करे जबकि भारत इस पर संधि को पक्षपात पूर्ण तथा भारतीय राष्ट्रीय हितों के लिए हानिकारक समझता था। तात्कालीन प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति कार्टर को यह बता दिया था कि भारत केवल तारापुर और राजस्थान के

परमाणु संयंत्रों के लिए पूर्व सहमत निगरानी शर्तों को ही मान सकता है। लेकिन अन्य संयंत्रों पर न तो अन्तर्राष्ट्रीय निगरानी स्वीकार करेगा और ना ही परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करेगा। भारत नें सर्वप्रथम 1963 में आंशिक परमाणु परीक्षण निषेध संधि पर हस्ताक्षर करके यह स्पष्ट कर दिया था कि वह परमाणु शक्ति का शांतिपूर्ण उपयोग करना चाहता है। और वर्ष 2000 तक विश्व राजनीति में समय–समय पर आये परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, 1968 में जहां एक ओर एन. टी.पी पर हस्ताक्षर करने में असहमति दिखायी वही दूसरी ओर 1971 सागर तलीय शस्त्र नियंत्रण संधि पर हस्ताक्षर भी किये। 1974 में भारत ने अपना पहला भूमिगत आणविक परीक्षण किया जिससे उसके सामने पश्चिमी राष्ट्रों की भारत विरोधी नीति की कलई खुल कर सामने आयी और 1998 में पोखरन परिक्षण द्वितीय करके भारत ने अपने को अणु शस्त्र सम्पन्न राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर दिया। इस बार भी भारत को पश्चिमी राष्ट्रों तथा अणु शस्त्र सम्पन्न राष्ट्रों का विरोध सहना पड़ा विशेष रूप से भारत के प्रति अमेरिकी नीति अत्यन्त कटुता पूर्ण रही। अतः लेखक ने तर्क देते हुए कहा है कि अमेरिका द्वारा भारत को दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन के घटक के रूप में सहयोगी के रूप देखा जाना चाहिए, जिससे दोनो के हितों की साधना हो सके।

Mathew (2010)– लेखक के द्वारा भारत अमेरिका संबंधों को राष्ट्रपति बराक ओबामा के समय में विश्लेषित किया है। बराक ओबामा के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद भारत–अमेरिका के सम्बन्धों के लिए स्वर्णिम काल देखा गया। बराक ओबामा ने भारत के गणतंत्र दिवस के अवसर पर कहा था कि "यह हमारे साझा मूल्य है जो लोगों और सरकारों के बीच एक मजबूत रिश्ते का आधार बनाते है।" उन्होने आगे कहा कि "भारत के साथ हमारी तेजी से बढ़ती और गहरी दोस्ती दुनिया के सभी नागरिकों को लाभ प्रदान करती है। क्योंकि हमारे वैज्ञानिक पर्यावरणीय चुनौतियों को एक साथ हल करते है, और हमारी सरकारे दुनिया भर में शांति, समृद्धि और स्थिरता को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करती है।" लेखक के अनुसार बराक ओबामा के राष्ट्रपति काल में भारत व अमेरिका बहुपक्षीय सम्बन्धों की चरम स्थिति की ओर अग्रसर थे। ओबामा से पहले

किसी और अमेरिकी राष्ट्रपति के काल में इतने व्यापक सम्बन्ध नही देखे गये थे। तथा बराक ओवामा के राष्ट्रपति काल में ही भारत व अमेरिका मित्रता का नया आयाम प्रारम्भ हुआ।

Bertsch (2011) लेखक ने अपने लेख में तर्क देते हुआ कहा है कि भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका ने हाल ही के वर्षों में सुरक्षा, व्यापार और तकनीकि मुद्दों पर स्पष्ट संकेत के साथ रणनीतिक सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयास किया है। लेखक ने इसको स्पष्ट करते हुए कहा है कि मई 2005 की सी.आई.ए. द्वारा रिपोर्ट में भारत को एक "उभरती हुई वैश्विक शक्ति" के रूप में पहचाना गया है और बुश प्रशासन ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि अमेरिका इस वृद्धि का स्वागत करता है और भारत को इस स्थिति तक पहुँचाने में मदद करना चाहता है। जिससे दोनों देश एशिया और दुनिया में कही भी आर्थिक और सुरक्षा की समस्याओं को हल करने के लिए एक साथ काम कर सके। लेखक के द्वारा अपनी पुस्तक में बताया गया है कि भारत अमेरिका के इस क्षेत्र में प्रयोगात्मक कार्य किये जा रहे है। यह इस बात से और स्पष्ट होते है कि जुलाई 2005 को राष्ट्रपति बुश और प्रधानमंत्री मनमोहन के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों में तेजी से गुणात्मक परिवर्तन के लिए प्रयास किये गये जो दोनों राष्ट्रों के हितों में वृद्धि करे।

Tharror (2013) संयुक्त राज्य अमेरिका के 2012 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए भारतीय दृष्टिकोण में अलग पहलू यह था कि कोई भी उस परिणाम के लिए चितिंत नहीं है। भारतीय नीति निर्माण मंडलियों में यह आम सहमति बन गई है कि भारत– अमेरिका संबन्ध अब सही रास्ते पर है और व्हाइट हाउस में डेमोकेटस और रिपब्लिक दोनो इस विकास के लिए जिम्मेदार है। 2010 में ओवामा की सफल भारत यात्रा और संसद के संयुक्त सत्र में उनके ऐतिहासिक भाषण भारत–अमेरिका सम्बन्धों में सबसे महत्वपूर्ण मील के पत्थर की तरह साबित हुआ है। भारत–अमेरिका परमाणु समझौते ने भारत को एक साथ दो वैश्विक परमाणु क्लब में शामिल कर लिया। इसके बावजूद भारत का यू.एस.ए ने परमाणु शक्ति बनने की संकट उत्पन्न करने की कोशिश की है। भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य संबंधों में सुधार देखा जा रहा है। तथा

भारत व अमेरिका के सम्बन्धों के सुधार हेतु उनके मध्य विवादों को कूटनीतिक आधार पर समाप्त किया जाना चाहिए।

Jain (2014) लेखक ने भारत अमेरिका सम्बन्धों का विश्लेषण किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत बराबर कहते आये है चूँकि भारत व यू.एस.ए दोनो राष्ट्रो में प्रजातंत्र है अतः दोनों ही राष्ट्र सैद्धान्तिक रूप में एक दूसरे के नजदीक है, दोनों के लक्ष्य समान है परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यह केवल सैद्धान्ति बात है क्योंकि पाकिस्तान में अधिकांशतः अधिनायक तंत्र रहा हैं किन्तु अमेरिका ने भारत की तुलना में पाकिस्तान का अधिक साथ दिया है। वास्तविकता यह है कि भारत अमेरिका सम्बन्धों की धूरी सदैव पाकिस्तान रहा है। शीत युद्ध के दौरान भारत अमेरिका संबंध इस बात पर निर्भर करते थे कि भारत और सोवियत संघ के सम्बन्ध कैसे है। यदि भारत सोवियत संघ के नजदीक आया तो अमेरिका भारत से उतना ही दूर चला गया। यह यथार्थ है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद ब्रिटेन और फ्रॉस का स्थान अमेरिका ने ले लिया था। उसका ध्येय पूरे विश्व पर आधिपत्य स्थापित करना था। अमेरिका साम्राज्यवाद का प्रतीक रहा। उसके रास्ते में बाद में भी आने वाले असम्बद्ध देश उसके दुश्मन बनते गये। शीत युद्ध के बाद विश्व ने एक नयी व्यवस्था का आरम्भ हुआ यह दुनिया एक ध्रुवीय हो गयी। तत्पश्चात् भारत अमेरिका सम्बन्ध का स्वरूप बदलता गया। लेखक ने विश्लेषित किया है कि वर्तमान में भारत अमेरिका संबंधों का आधार आर्थिक सहयोग है दोनों राष्ट्र स्व राष्ट्रीय हित के आधार पर नयी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आपसी संबंधों को आगे बढ़ा सकते है।

Malone (2014) भारत अमेरिका सम्बन्धों का विश्लेषण करते हुए अपने आलेख में कहा है कि वर्तमान के वैश्विक राजनीतिक समीकरण में विश्व की दो सार्थक लोकतांत्रिक शक्तियों के मध्य न केवल राजनैतिक बल्कि आर्थिक सांस्कृतिक, सामाजिक तथा रणनीतिक क्षेत्र में विभिन्न साझेदारीयों के माध्यम से सम्बन्ध स्थापित हो रहे है। लेखक का कहना है कि यह सम्बन्ध अमेरिका और भारत के मध्य सामरिक भागीदारी के साथ–साथ स्वतंत्रता के साझा मूल्यों, सार्वभौमिक मानवधिकारों, सहिष्णुता व बहुलवाद न्याय, रचनात्मक निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र में

स्थापित हो रहे है। वर्तमान में भारत की बढ़ी वैश्विक शक्ति, तीव्र आर्थिक विकास तथा गुटनिरपेक्षता की नीति को देखते हुए अमेरिका इसे नजरअंदाज नही कर सकता है। साथ ही भारत के लिए यह समय महत्वपूर्ण है, जब वह अमेरिका से तकनीकि क्षमता प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार जितनी जरूरत भारत को अमेरिका की है उतनी ही जरूरत अमेरिका को भी भारत की है, क्योंकि दोनो ही देश वैश्विक स्तर पर शांति, स्थिरता समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। इसलिए दोनो देशों के मध्य द्विपक्षीप सम्बन्धों का प्रासांगिक विकास की जरूरत है। क्योंकि दोनो देशों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रहित को प्रधानता देते हुए बहुआयामी सांस्कृतिक एवं आर्थिक साझे पक्षों के मध्य बढ़ावा देना है। दोनो ही राष्ट्र आर्थिक व राजनैतिक आधार पर अपने सम्बन्धों को आगे ले जा रहे है। भारत व अमेरिका दोनो ही देशो को मिलकर विश्व शान्ति व सुरक्षा के लिए मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

Bishoyi (2015) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा भारत–अमेरिका के मध्य घरेलू मुद्दे, रणनीतिक तथा गतिशील हितों के प्रभावों को विश्लेषणात्मक रूप से व्यक्त किया गया है। 21वीं शताब्दी में संयुक्त राज्य अमेरिका की विदे"ा नीति में दक्षिण एशिया का महत्वपूर्ण स्थान है तथा दक्षिण एशिया में भारत प्रमुख है, जो नवजात महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। वि"लेषकों का मानना है कि ए"िाया में चीन के बढ़ते दबदबे के प्रतिकार के रूप में भारत–अमेरिका को अपरिहार्य साथी कहा जा सकता है। 2004 के बाद से वाशिंगटन तथा नई दिल्ली साझा मूल्यों के आधार पर जाहिर तौर पर भूराजनीतिक हित, आर्थिक हित, सुरक्षा और वैश्विक पहल के साथ असैनिक परमाणु सहयोग की योजनाए चल रही है। 2005 में संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग का विस्तार करने के लिए 10 वर्ष के रक्षा ढाँचे के समझौते पर हस्ताक्षर किये गये दोनों देश अब कई और अभूतपूर्व संयुक्त सैन्य अभ्यासों में संग्लन है और भारत में प्रमुख अमेरिकी हथियारों का आयात बढ़ा है। 2004 से 2008 तक सभी द्विपक्षिय व्यापार का मूल्य बढ़ता जा रहा है। लेखक के द्वारा दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी समस्या भारत–पाकिस्तान के मध्य कश्मीरी संघर्ष में अमेरिका के दृष्टिकोण को विश्लेषित किया गया है। लेखक ने अपनी

पुस्तक में चर्चा की है कि राष्ट्रपति बराक ओबामा के प्रशासन ने भारत के साथ गहरे अमेरिकी संबंधों की आवश्यकता समझी जो 2000 में विल क्लिंटन द्वारा प्रारम्भ किये गये थे। लेखक ने विश्लेषित किया है कि यह "भारत अमेरिका 3.0" कूटनीति जुलाई 2011 में देखी गयी जब दूसरे अमेरिकी–भारत रणनीतिक वार्ता सत्र में अमेरिकी अधिकारियों के बड़े प्रतिनिधि मण्डल ने वैश्विक और द्विपक्षीय मुद्दों की एक विस्तृत शृंखला पर चर्चा करने के लिए नई दिल्ली का दौरा किया था। लेखक के अनुसार दोनों देशों में स्वतंत्र विश्लेषकों की चिंता है कि हाल के वर्षों में साझेदारी कम हो गयी है।

Baghel (2016) उपर्युक्त साहित्य में वी.एस.वघेल के द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से भारत और अमेरिका सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है। मोदी की विदेश नीति के पूर्ण 64 वर्षों की नीति में भारत एक सोफ्ट स्टेट के रूप में शामिल था। प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका यात्रा की जहाँ उन्होंने दोनो देशों के राजनैतिक, व्यापारिक तथा सैन्य सभी मद्दों पर कार्य किया। वे राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनके कैबिनेट सहयोगियों से मिले तथा भारत–अमेरिका सम्बन्धों में आये गतिरोध को दूर करने के प्रयासों के लिए रजामन्द हो गये थे। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 26–30 सितम्बर 2014 के बीच अपनी पाँच दिवसीय अमेरिकी यात्रा सम्पन्न की। इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के वार्षिक अधिवेशन को सम्बोधित किया, अमेरिकी राष्ट्रपति से भेंट की तथा प्रवासी भारतीयों को सम्बोधित किया। मोदी– ओबामा (संयुक्त सम्पादकीय) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के वाशिंगटन पोस्ट के लिए 1 अक्टूबर 2014 के संस्करण में संयुक्त सम्पादकीय की। संयुक्त संपादकीय का शीर्षक था– "ए रिन्यूड–इंडिया पार्टनरशिप फॉर ट ट्वेंटी फर्स्ट सेन्चुरी" सम्पादकीय में कहा गया की– भारत तथा अमेरिका के मध्य सम्बन्ध अधिक प्रभावी है। यह समान मूल्यों तथा पारस्परिक लाभों से जुड़ा है। दोनों देश अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा शान्ति के लिए कार्य कर सकते है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ भारत तथा अमेरिका के मध्य सहभागिता को अधिक भरोसेमन्द तथा प्रतिबद्ध बनाया जा सकता है। भारत अमेरिका सहयोग का नया नारा बना 'चले

साथ–साथ फारवड टुगेदर वी गो' इसके तरह कई अहम समझातों पर हस्ताक्षर किये गये। तथा भारत तथा अमेरिका ने मुक्त तथा समावेशी विश्व व्यवस्था के लिए बहुआयामी उत्तरदायित्व निभाने पर बल दिया।

Dubey (2016) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा भारत अमेरिका सम्बन्धो का व्यापक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। उनके अनुसार अमेरिका भारतीय विदेश नीति में एक वहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अमेरिका चीन के उपरान्त भारत का दूसरा सवसे वड़ा व्यापारिक भागीदार है और प्रौधोगिक तथा विदेशी निवेश का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। शीत युद्ध के दौरान भारत अमेरिका सम्बन्धो में नकारात्मक दिखाई दी जो भारत और रूस की साझेदारी से प्रभावित रही। परन्तु वैश्वीकरण की सक्रिय प्रकिया में अमेरिका ने ही शुरूआत में भारत में उपब्लध विशाल वाणिज्यक और निवेश के अवसरो से अवगत कराया तथा इसके उपरान्त में अन्तराष्ट्रीय व्यापार मौद्रिक तथा वित्तिय मुद्दों को सुलझाने में भारत के सहयोग की आवश्यकता को पहचाना । शीतयुद्धोतर काल में अमेरिका का उद्भव एक महाशक्ति के रूप में हुआ तथा भारत अमेरिका सम्बन्ध शीत युद्ध के दौरान रहे सम्बन्धो से प्रभावित रहे हलांकि भारत के द्वारा अमेरिका के प्रति अच्छे सम्बन्ध बनाने के दूसरे किये प्रदर्शित किये। भारत ने संयुक्त राष्ट्र की परिषद में अमेंरिका की 1990 में इराक पर गतिरोध का समर्थन किया। इसे अमेंरिका की अन्य सहयोगियो की तुलना में अधिक विश्वासपूर्ण लागू किया। लेखक के अनुसार शीत युद्धोत्तर काल में भारत अमेरिका के बीच विश्वास की प्रकिया लागू हुई । ओबामा के राष्ट्रपति पदग्रहण करने के उपरान्त उन्होने भी भारत के साथ अमेरिका के परम्परागत सम्बन्धो के आधार पर अपनी विदेश नीति का निर्धारण किया और विश्व शक्ति तथा स्वहित की नीति को ही आगे बढ़ाया। इसके साथ ही भारत में यूपीए के 10 वर्षो के शासन काल में भारत द्वारा अमेरिका के साथ अच्छे सम्बन्ध वनाने के कई ऐसे उपाय अपनाये गये जो भारत व अमेरिका के मध्य परस्पर विश्वास व सामंजस्य उत्पन्न करे। इसमें भारतीय अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाने के लिए कई क्षेत्रो में विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया गया। अन्त में लेखक अपने अध्याय में भारत अमेरिका सम्बन्धों का विश्लेषण करते हुए भारत व अमेरिका

की सिविल न्यूक्लियर डील की भी चर्चा करते है। इस समझौते के द्वारा अमेरिका भारत को अपने परमाणु सम्बन्धित हथियार के निर्माण के लिए स्वतन्त्र कर दिया गया परन्तु समझौते में कहा गया है कि भारत इसके द्वारा विश्व शान्ति की गतिविधियो को प्रभावित नहीं करेगा इस प्रकार वर्तमान के परिदृश्य में भारत अमेरिका सम्बन्ध नये आयाम को प्राप्त कर रहा है।

Parpiani (2018) ट्रम्प प्रशासन के तहत भारत अमेरिका संबंधों की गतिशीलता दोनो देशों की सुरक्षा साझेदारी पर महत्वपूर्ण है हालांकि इन सम्बन्धों को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के तेजी से स्पष्ट लेन–देन को विश्व दृष्टि से चुनौती दी जा रही है। अमेरिका में भारत की महत्वपूर्ण स्थिति के बावजूद– भारत प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा और अमेरिका के साथ इसके अपेक्षाकृत छोटे व्यापार असंतुलन के कारण भारत को ट्रम्पिदन लेन–देन के दृष्टिकोण के प्रतिकूल प्रभावों से नहीं बख्शा जायेगा। इस संक्षिप्त प्रस्ताव में कहा गया है कि नई दिल्ली को अपनी सुरक्षा के लिए अमेरिका की सुरक्षा की जरूरत है व्यापार और आब्रजन पर बकाया मुद्दे से हटा दिया जाये जो लोक लुभावन अमेरिकी राष्ट्रपति की इच्छा को आमंत्रित करने के लिए किये जाते है। इसके अलावा, अन्त में सुरक्षा साझेदारी और निर्भरता का लाभ उठाने के लिए राष्ट्रपति ट्रम्प के झुकाव के खिलाफ नई दिल्ली में भारत के दलीय आशावाद में तेजी से तैयार करना होगा। भारत के प्रमुख हितों के साथ प्रतिवंधित होकर अमेरिकी सीनंत तथा हाऊस ऑफ रिप्रेसेटेटिक से जुड़ाव उत्पन्न करना होगा। हाल ही में यू.एस.ए डन कॉककस से विधायकों के संग्रह ने अमेरिका प्रतिनिधि सभा में यूएस– इंडिया इनहैंस्ड कॉपरेशन एक्ट को शामिल किया है। जिसमें भारत को एक प्रमुख रक्षा साझेदारी के रूप में नामित करने और प्रमुख रूप से नई दिल्ली के लिए शस्त्र नियति नियंत्रण अधिनियम में एक और संशोधन शामिल किया है। अमेरिका रक्षा–अधिग्रहरण के मामलों में भारत का सहयोगी है। इसके बावजूद दोनों देशों का कोई औपचारिक गठबन्धन नहीं है। रक्षा मंत्री सीतारमण और रक्षा सचिव मैटिस के बीच एक व्यूरो हॉटलाइन पर विकसित गतिशीलता को अधिक से अधिक बढ़ाना चाहिए। और भारतीय और अमेरिकी रक्षा और विदेश

सचिवों के बीच 2+2 बैठको, तथा मंत्रिमंडल स्तर पर संबधों को संस्थागत बनाना चाहिए। भारत अमेरिका सम्बन्ध सुरखा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

George (2018) प्रस्तुत लेख में लेखक मानना है कि डोनाल्ड ट्रम्प और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने देशों को महान बनाने के वादे पर राजनीति का निर्माण किया है। इस राजनीति का मुख्य लक्ष्य भारत और अमेरिका को विश्व मंच पर नेता के रूप में रखना है। यह इस धारणाा पर आधारित है कि दोनों देशों के अपने पूर्ववर्तियों से एक मतभेद विरासत में मिला है कि दोनों देश अपने–अपने देश के हितों को लेकर आगे बढ़ते है। भारत–अमेरिका दोनों ही अपने शत्रु तथा अपने ही मित्रों की धारणाओं को अपने सम्बन्धों पर लागू करते रहे। भारत ने अमेरिका से अपने सम्बन्धों को अमेरिका की पाकिस्तान को सैन्य व आर्थिक साझेदारी के आधार पर निर्धारित किया है। वहीं अमेरिका ने भी भारत व रूस की बढ़ती नजदीकी के कारण भारत के प्रति नकारात्मक प्रवृत्ति को प्रदर्शित किया। लेखक द्वारा लेख में ट्रम्प प्रेसीडेंसी के तहत दुनिया के साथ अमेरिका के संबंधों में होने वाले बदलावों और भारत पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया है। मोदी व ट्रम्प दोनो ने व्यापारिक व सुरक्षा की दृष्टि से भारत– अमेरिका सम्बन्धों को बेहतर बनाने की बात कही है।

समस्या कथन –

भारत–संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्ध उतार–चढ़ाव के साथ अनिश्चित रहे हैं। यथार्थ रूप में देखा जाये तो भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका कभी स्थायी मित्र नही रहे किन्तु कभी ऐसा अवसर नही आया जब दोनों देशों के मध्य संबंध विच्छेद की परिस्थिति बनी हो और राजनीतिक सम्बन्धों का विच्छेदन किया गया हो। दोनों देशो के मध्य सम्बन्धों का रेखा चित्र मित्रता की चाह, कटुता, तनाव, अलगाव और अविश्वास के दायरे में निरन्तर चढ़ता उतरता रहा हैं और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के प्रसंगों पर विचार और व्यवहार में मतभेद भी अधिक उजागर हुए है। शीत युद्ध के दौर में संयुक्त राज्य अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान के प्रति अधिक तथा भारत की प्रति कम रहा परन्तु वर्तमान में अमेरिका की नीति में परिवर्तन हुआ है अमेरिका भारत को पाकिस्तान

की तुलना में अधिक महत्व दे रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा भारत के पड़ोसी राज्यों सैन्य हस्तक्षेप के कारण भारत का सुरक्षात्मक वातावरण प्रभावित होता है। भारत के पाकिस्तान और चीन के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध हैं तथा संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पाकिस्तान सैन्य आर्थिक सहायता प्रदान करने से भारत के लिए असुरक्षात्मक वातावरण में वृद्धि हो रही है। ऐसी परिस्थिति में भारत के लिए अमेरिका एक बहुत ही महत्पूर्ण देश हैं। भारत–अमेरिका दोनों ही देश आंतकवादी घटनाओं से त्रस्त हैं, ऐसे में भारत व अमेरिका आपस में एक सहयोग करके आतंकवाद व विश्व शान्ति के लिए प्रयासरत है। वर्तमान में भारत पाकिस्तान व अमेरिका सम्बन्धों में परिवर्तन देखा जा रहा है। ओबामा के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने भी आतंकवाद जैसे मुद्दे पर भारत का साथ देने की बात को स्वीकार किया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में परिवर्तनशीलता के कारण भारत–अमेरिका सम्बन्धों में सुधार आवश्यक हो गया है।

उद्देश्य :–

1. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका द्विपक्षीय संबन्धो की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के परमाणु सन्धि समझौते का अध्ययन करना।
3. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धो को प्रभावित करने वाले कारको को अध्ययन करना
4. भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य चुनौतियों व अवसरों का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका दिपक्षीय सम्बन्ध अनिश्चित रहे है।
2. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य परमाणु सन्धि समझौते से दोनो राष्ट्रों के सम्वन्धो में मजबूती आयी है
3. भारत व संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धो को प्रभावित करने वाले घटक पाकिस्तान–चीन तथा रूस है।
4. भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य आर्थिक व रणनीतिक आधार पर चुनौतियों व अवसर उत्पन्न होते है।

शोध पद्धति : वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक

तथ्य संकलन :– प्रस्तुत संसोधन द्वितीय स्रोतों पर आधारित है। द्वितीय स्रोतों के प्रमुख स्रोतों में पुस्तकों, सरकारी दस्तावेजों पत्रिकाओ तथा इंटरनेट वेवसाइट और अन्य प्रकाशित और अप्रकाशित दस्तावेजो से तथ्यो को प्राप्त किया जायेगा।

अध्ययन का महत्व :– भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धो में परिवर्तन की स्थिति रही है। वर्तमान में भारत अमेरिका संम्बन्धो में सकारात्मक सुधार प्रारम्भ हो रहा है। अमेरिका के साथ सम्बन्ध भारत की विदेश नीति मे महत्वपूर्ण स्थान रखते है। भारत अमेरिका द्वारा अपने आर्थिक तकनीकी, सैन्य व सामरिक हितों को पूरा करता है तथा भारत के आधार पर अमेरिका दक्षिण एशिया में चीन के बढते प्रभाव को कम करने की कोशिश करता है। वर्तमान में दोनों देशों के मध्य सहयोगात्मक संबंधों का विकास हो रहा है।

यह सहयोगात्मक सम्बन्ध विश्व में नव विश्व व्यवस्था का निर्माण कर सकते है क्योकि अमेरिका एक महाशक्ति है तथा भारत एक उभरती नव शक्ति है। प्रस्तुत शोध दोनों देशों के नये आयामों का विश्लेषण करेगा साथ ही अनुसंधान का परिणाम अनुसंधानकर्ता व नीति–निर्माताओ के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा। अध्ययन के परिणाम वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करेगें। निदेशनकर्ता और परामर्शदाता भी इस शोध के परिणाम से लाभान्वित हो सकेगा तथा अन्तर्राष्टीय सम्बन्ध के इस विषय के अध्ययन के परिणामों से विद्यार्थी भी जागरूक हो सकेंगे।

प्रस्तुत अध्यायः–

1. प्रस्तावना
2. भारत–अमेरिका द्विपक्षीय सम्बन्धः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
3. भारत–अमेरिका परमाणु सन्धि समझौता
4. भारत अमेरिका संबन्धों को प्रभावित करने वाले घटक
5. भारत अमेरिका के मध्य चुनौतियॉ व अवसर
6. निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ

- Agrwal. R and pradhon K.P (2014) "Us pivot to the Asia-Pavcific: Impact and Implications for west Asia" (edited by Muni, S.D and chandha, V. in book Asian Stratergic Review 2014 Us Pivot and Asian Security) New Delhi: Pentagon pp. 85-104.
- Antunes. S.L Camisao, I (2017): Realism, (edit- Mc Glinchey, Scheinfug, Walten in book International Relations Theory) England: E-International Relations Publishing.
- Baghel,V.S.(2016) “Pradhanmantri Narendra Modi Ki Videsh Niti”, Delhi; Ketpiller Publisher. P.p 14-40
- Bandyopadhgaga (2003) “The Making of India's Foreign Policy”, New Delhi, Alled Publihers PVT. limited. p. 244.
- Bertsch, G.K Ganlaut, S and Sricvastava, A (2011): "Enguging India: US Stratergic Relations with the world's largest Democracy" New York: Rutledge, pp-223-237.
- Bhardwaj, A (2018): "India America Relations (1942-62): Rooted In the liberal inter national order" New York: Routledge. Available at 5 https://www.routledge.com/India-America-Relations-1942-62-Rooted-in-the-Liberal-International-Order/Bhardwaj/p/book/9780815394044.
- Bishoyi, S. (2015): "India U.S security cooperation in Asia: Can india be a new security provider?" (edited by muni, S.D. and Chandha, V. in book Asian Stratergic Review 2015 India as a security provider) New Delhi: pentagon, pp-166-192.
- Blackwill, R.D and Chandra, N (2014): The united States and India: A shared strategic future" Joint Study Group Report.;council on foreign relations;Aspen Instute India. Available on https://beckend-live.crf.org/sites/default/files/pdf/2011/08/USIndia-jointstudygroup2g.pdf
- Conley , J M. (2001) : "Indo-Russian Military and Nuclean coopration lessons and options for U.S policy in south Asia", oxford: Lexington Book, PP 7-169

- Dubey, M. (2013) "Indian's Foreign policy coping with the changing world" Delhi: Ortient Blackswan private Limited, P.P 208-258
- Dunne, T. (2007): "Realism" (Edit. Baylis, Smith & Owens in book The Globalization of World Politics: An Introduction to International Relations), United Kingdom: Oxford, pp.96-97.
- Dunne, T. (2008) : "Liberalism" (edit. Bylis, Smibh 2 owens in Bok The Globalization of world politics : An Introduction to International relations united kingdom : Oxford.
- George, V.K: (2018): "Open Embrance:India-US Ties in the Age of Modi and Trump" .Panguin. available at https://www.researchgate.net/ publication/331917430_OPEN_EMBRACE_India-US_Ties_in_the_Age_of_Modi_and_Trump_by_Varghese_K_George_Penguin_India_Gurugram_2018/link/5c931d82299bf111693b7371/download
- Gupta,K.R.(2009): "India's International Relations" New Delhi:Atlantic Publisher & Distributers. P.P.20-126
- Jain, B.M. (2016): "India U.S Relations In the age of uncertainty: an uneasy courtship, Rethinking Asia And International Relations" New York: Routhledge. Avaiable on https://www.routledge.com/India-US-Relations-in-the-Age-of-Uncertainty-An-uneasy-courtship/Jain/p/book/9781472438959
- Jain, P.C (2014): "Indias foreign policy" New delhi: Atlantic Publication, pp. 193-209
- Kronstadt. A.K (2018): "Terrorist Attacks in Mumbai, India and Implications for U.S Interests". available on https://www.researchgate.net/publication/292405219 Terrorist attacks in Mumbai India and implications for US interests accessed on 20/12/18
- Madan. T. (2012): "A note on the China-India-U.S triangle and India's strategies" (edited by venkat sharmy, K. and George, P. in book grahd strategy for India 2020 and beyond) New Delhi: Pentagon Security International, Pp.194-202

- Malone, D.M. (2011): "Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign policy" New York: Oxford University Press, pp. 153-178
- Mathew, (2010): "Fault hines in the nascent Parthership: India US Relatins Under the obame presidency" (edited by Mathew T. in book In search of congruence perspectives on india-US Relations Under the obms Admini stations) New Delhi: Maghum custom. pp. 1-32.
- Mathur, A (2004): "Indo America Relation : Foreign Policy orientation and perspectives of P.V. Narsimba Roo and bill Clinton" New Delhi: Atlantic Publication.
- Mishra, B (2004): "post-1998 Track II Diplomacy between India and the USA: An Indian perspective" strategic analysis Vol. 28, No.1, Jan-March 2004, IDSA. available at https:/idsa.in/strategicanalysis/post-198track2diplomacybetweenindiaandtheusa B-mishra-0104 accessed on 13/01/2019
- Misra, V. (2015): "Core concerns In Indian difference and the Imperatives for reforms" New Delhi: Pentagon.IDSA available on http://idsa.in/system/file/book-core-concern in indiadefence pdf accessed on 02/01/19
- Mitra, S.K. 8 Rill B. (2006) "India's New Dynamics in foreign policy" (edited by Bertch, G.K & Gahlant's in the Book India-US Relations) Hanns seidel foundation.
- Mitre, S.K & Rill B. (2006) "India's New Dynamics in Foreign policy" (edited by Garry in the Book India's New Global role after the U.S India Nuclean Deal) Hanns Seidel Foundation.
- Modlaski.J. (1962): "A Theory of Foreign Policy", Princeton University: London.
- Mohanty, N. (2015): "India_US Relations: Terrorism, Nonproliferation, and Nucleaar Energy" London: Lexington, pp- 191-195.
- More, S. (2015): "Indigenous Historical Knowledge: Kautily & his Vacabulary", (edit. Mishra, Gautam & Gupta), New Delhi: IDSA, pp. 18-19.
- Morgenthau. H.J. & Thompson. K.W. (1985): "Plitics Among Nations : The Struggle for power and Peace" Sixth edition, New York: Kalyani Publishers.

- Muni and Chandha : (2013) "Asan stratergic Review" (edited by shrivastav, S.K in book Us Rebalancing strategy Towards Asia-pasific: Under-standing Reasons and Implicatios) New Delhi: Pentag on Press, pp.215-126
- Parpiani,K.(2018): "India US Relations Under Trump:Gaurding Against Trasactionalism by Pivoting to the US Legislature". ORF issue brief October 2018 issue no.262
- Rathi, M (2009) "Bharat America Sambandh: Anvik Nit eke sandarbh Me Delhi : Gaud publishes & Distributers
- Schmidt, B.C. & Dunne, T. (2005): "Realism", third edition (edit, Baylis, Smith & Owen in book The Globalization of Word Politics: An Introduction to Relations), United Kingdom: Oxford. P.96
- Scott, D. (2011): "India Relations with the USA" (edited by david scott in book Handbook of India's Inter national Relations) united Kingdom: Routledge, pp. 243-250.
- semetko, H.A. (2016): "Framing U.S-India Relations (edited by goswami, N in book India's Approach To Asia strategy, Geopolitics and Responsibility)" New Delhi: Pentagon, pp. 98-114.
- Shrma, A (2017): "Indian Lobbying and Its Influence In Us Decision Making" New Delhi: SAGE. Available on https://us.sagepub.com/en-us/nam/indian-lobbying-and-its-influence-in-us-decision-making/book257644#description
- Tellis, A.J. (2015): "India as A new Global power an action agenda for the united states".Carnegie Endowment For International Peace. Available on http://carnegie endowment.org/files/-india-globle-power.pdf
- Tharoor,S.(2013): "Pax India, India And The World Of The 21st Century". Haryana: Penguing Group. P.P 209-240
- Vickery, R.E. (2011): "The Eagle and the Elephant: Strategic Aspects of US-india Economic Engagement" Johs Hopkins University.

- Wetering, C.V.D (2014): "Constructing National security: U.S Relations with India and China.".Common Wealth & Comparitive Politics:ISSN:1466-2043 Routledge.
- Wetering, C.V.D (2016): "Changing US Foreign Policy Toward India, India US Relations Since The Cold War". USA :Palygrave Macmillan Publisher.
- Weiss, L.(2007); "US-India Nuclear Coopration", Nonproliferation Review,14:3, 429-457, DOI;1080/10736700701611738; Routledge Taylor & Francis Group. available at https;//doi.org/1080/10736700701611738.